केन्दीयसक्कतविस्सविज्जालयो (Central Sanskrit University)

बोद्धदस्सनपालिविज्जासाखा (Deptt. of Bauddhadarshan & Pali)

एम.ए. (पालि) पठमवस्सस्स पाठचरिया (Syllabus of M.A. Pali 1st Year)

कक्खा	सत्तङ्कं	पत्तसङ्केतो	पाठचरियाविवरणं	क्रेडिट	यूनिट	होरा
एम.ए. पठमवस्सं	पठमसत्तङ्कं	DSCC-16	पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) : 1. विद्यार्थियों को पालि भाषा की विभक्ति-व्यवस्था, उसके सामान्य नियमों तथा विभिन्न विभक्तियों के व्याकरणिक एवं व्यवहारिक प्रयोग से परिचित कराना। 2. वर्तमानकाल, भूतकाल, भविष्यत्काल, अनुज्ञा तथा विधिलिङ्ग के क्रियारूपों एवं उनके प्रयोग का व्यवस्थित अध्ययन कराकर पालि भाषा की व्याकरणिक संरचना की सम्यक् समझ विकसित करना। 3. नव-धातुगणों के आधार पर धातुरूप-निर्माण, वाक्य-रचना तथा व्याकरणाधारित भाषा-अधिगम के माध्यम से विद्यार्थियों की भाषिक दक्षता एवं अनुवाद-कौशल का विकास करना। 4. पालि व्याकरण के सिद्धान्तों का व्यावहारिक अनुप्रयोग कर विद्यार्थियों में शुद्ध पालि वाक्य-निर्माण, पाठ-बोध तथा प्रभावी भाषिक संप्रेषण की क्षमता विकसित करना।			

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : 1. विद्यार्थी पालि भाषा की विभिन्न विभक्तियों, उनके प्रयोग तथा वाक्य में उनके व्याकरणिक कार्यों की व्याख्या एवं उचित अनुप्रयोग कर सकेंगे। 2. विद्यार्थी वर्तमानकाल, भूतकाल, भविष्यत्काल, अनुज्ञा तथा विधिलिङ्ग के क्रियारूपों का निर्माण एवं प्रयोग करते हुए शुद्ध पालि वाक्यों की रचना कर सकेंगे। 3. विद्यार्थी नव-धातुगणों के धातुरूपों का विश्लेषण कर विभिन्न कालों एवं प्रयोगों के अनुरूप उनका रूप-निर्माण और प्रयोग कर सकेंगे। 4. विद्यार्थी व्याकरणिक नियमों के आधार पर पालि गद्य एवं पद्य का सरल अनुवाद, व्याख्या तथा भाषिक विश्लेषण कर सकेंगे। 5. विद्यार्थी पालि व्याकरण के सिद्धान्तों का व्यावहारिक उपयोग करते हुए शुद्ध भाषा-प्रयोग, लेखन, संप्रेषण एवं वाक्य-निर्माण की दक्षता का प्रदर्शन कर सकेंगे।
			आधारगन्था- 1. पालि-महाव्याकरण, भिक्षु जगदीश काश्यप, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1993 2. 31 दिन में पालि, डा. भदन्त आनन्द कोसल्यायन, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			विभत्ति-परिचयो- पठमकण्डो (पठम काण्ड)- विभक्ति प्रकरण पठमो भागो (पठम भाग)- साधारण नियम -पठमा विभत्ति -दुतिया विभत्ति -ततिया विभत्ति -चतुत्थी विभत्ति -पञ्चमी विभत्ति -छट्ठी विभत्ति -सत्तमी विभत्ति -आलपनं	1	1	16-20
			किरिया-परिचयो (वत्तमानकालो)- कालो, पुरिसा, वचनानि च -भासा-सिक्खणं (व्याकरणमुखेन वत्तमानकालस्स वाक्यनिम्माणस्स कोसलवड्ढनाय पायोगिकं सिक्खणं) - नव-धातुगणानं पच्चेकं धातुस्स वत्तमानकाले रूपाणि।	1	2	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			किरिया-परिचयो (भूतकालो भविस्सकालो च)- कालो, पुरिसा, वचनानि च -भासा-सिक्खणं (व्याकरणमुखेन भूतकालस्स भविस्सकालस्स च वाक्यनिम्माणस्स कोसलवड्ढनाय पायोगिकं सिक्खणं) - नव-धातुगणानं पच्चेकं धातुस्स भूतकाले भविस्सकाले च रूपाणि।	1	3	16-20
			किरिया-परिचयो अनुञ्ञा (पञ्चमी विभत्ति), विधिलिङ्ग (सत्तमी विभत्ति)- कालो, पुरिसा, वचनानि च -भासा-सिक्खणं (व्याकरणमुखेन अनुञ्ञाय विधिलिङ्गस्स च वाक्यनिम्माणस्स कोसलवड्ढनाय पायोगिकं सिक्खणं) - नव-धातुगणानं पच्चेकं धातुस्स अनुञ्ञायं विधिलिङ्गे च रूपाणि।	1	4	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshatra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

कक्खा	सत्तद्धं	पत्तसङ्केतो	पाठचरियाविवरणं	क्रेडिट	यूनिट	होरा
एम.ए. पठमवस्सं	पठमसत्तं	DSCC-17	**पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) :** 1. विद्यार्थियों को विनयपिटक, विशेषतः *चुल्लवग्ग* के स्वरूप, संरचना, उद्देश्य तथा बौद्ध संघ के संगठन एवं अनुशासन में उसके महत्त्व से परिचित कराना। 2. *पञ्चसतिकक्खन्धक* एवं *सत्तसतिकक्खन्धक* के अध्ययन के माध्यम से प्रथम एवं द्वितीय बौद्ध सङ्गीतियों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, कार्यप्रणाली तथा बौद्ध धर्म के संरक्षण में उनकी भूमिका का सम्यक् बोध कराना। 3. मूल पालि पाठ के अध्ययन के माध्यम से विनय-साहित्य की भाषिक विशेषताओं, नैतिक मूल्यों तथा बौद्ध संघ-व्यवस्था की समकालीन प्रासंगिकता को समझने का कौशल विकसित करना।			
			अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : 1. विद्यार्थी विनयपिटक तथा *चुल्लवग्ग* की संरचना, विषयवस्तु एवं बौद्ध संघ में उसके महत्त्व की व्याख्या कर सकेंगे। 2. विद्यार्थी *पञ्चसतिकक्खन्धक* एवं *सत्तसतिकक्खन्धक* में वर्णित प्रथम एवं द्वितीय बौद्ध सङ्गीतियों की ऐतिहासिक घटनाओं, उद्देश्यों तथा परिणामों का विश्लेषण कर सकेंगे। 3. विद्यार्थी विनयसङ्गायन, धम्मसङ्गायन, खुद्दानुखुद्दकसिक्खापद, ब्रह्मदण्ड तथा संघीय अनुशासन से सम्बन्धित प्रमुख सिद्धान्तों का मूल्यांकन एवं विवेचन कर सकेंगे।			

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshatra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			4. विद्यार्थी यसस्थविर, रेवतस्थविर, सम्भूतसाणवासी तथा अन्य प्रमुख स्थविरों की भूमिका एवं उनके द्वारा संघ की शुद्धता और एकता के संरक्षण में दिए गए योगदान का समालोचनात्मक अध्ययन कर सकेंगे। 5. विद्यार्थी चयनित मूल पालि पाठ का अध्ययन कर उसकी भाषिक विशेषताओं, प्रसंगों एवं विनय-सिद्धान्तों की व्याख्या करते हुए बौद्ध नैतिकता और संघ-व्यवस्था के समकालीन अनुप्रयोग का विवेचन कर सकेंगे।			
			आधारगन्थो- विनयपिटके चुल्लवग्गपालि, सम्पादको-स्वामी द्वारिकादासशास्त्री, बौद्धभारती, वाराणसी, 2021			
			- विनयपिटकस्स परिचयो, - चुल्लवग्गस्स परिचयो, - पञ्चसतिकक्खन्धकस्स परिचयो, - पञ्चसतिकक्खन्धकस्स विसयवत्थु पञ्चसतिकक्खन्धकं 1. सङ्गीतिनिदानं 2. पञ्चन्नं भिक्खुसतानं सम्मुति	1	1	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			पञ्चसतिकक्खन्धकं 3. विनयसङ्गायनं 4. धम्मसङ्गायनं 5. खुद्दानुखुद्दकसिक्खापदकथा 6. आनन्दस्स दुक्कटानि 7. पोराणत्थेरवत्थु 8. ब्रह्मदण्डकथा - उदेनराजवत्थु - छन्ने ब्रह्मदण्डारोपनं 9. तस्सुद्दानं	1	2	16-20
			- सत्तसतिकक्खन्धकस्स परिचयो, - सत्तसतिकक्खन्धकस्स विसयवत्थु, सत्तसतिकक्खन्धकं 1. यसत्थेरवत्थु - यसत्थेरस्स पटिसारणीयकम्मं - समणब्राह्मणानं चत्तारो उपक्किलेसा - मणिचूळकगामणीकथा	1	3	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshatra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			- वज्जिपुत्तकभिक्खूहि यसस्स उक्खेपनीयकम्मकरणे सन्निपातो 2. उभयपक्खेहि पक्खसंगहउय्योगो - सम्भूतसाणवासित्थेरकथा रेवतत्थेरवत्थु			
			- वज्जिपुत्तकभिक्खूहि रेवतपक्खसङ्गहउय्योगो - साळ्हत्थेरस्स परिवितक्को - उत्तरभिक्खुकथा - सङ्घत्थेरसब्बकामीवत्थु - अधिकरणं विनिच्छिनितुं सङ्घसन्निपातो तस्सुद्दानं	1	4	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

कक्खा	सत्तद्धं	पत्तसङ्केतो	पाठचरियाविवरणं	क्रेडिट	यूनिट	होरा
एम.ए. पठमवस्सं	पठमसत्तं	DSCC-18	**पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) :** 1. विद्यार्थियों को *मिलिन्दपञ्ह* के स्वरूप, रचनात्मक विशेषताओं, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा पालि अनुपिटक साहित्य में उसके विशिष्ट स्थान से परिचित कराना। 2. राजा मिलिन्द एवं आचार्य नागसेन के मध्य संवादों के माध्यम से बौद्ध दर्शन की प्रमुख अवधारणाओं, विशेषतः अनात्मवाद, प्रतित्यसमुत्पाद, नाम-रूप, कर्म, पुनर्जन्म तथा निर्वाण के सिद्धान्तों की सम्यक् समझ विकसित करना। 3. तर्क, प्रश्नोत्तर एवं उपमा-प्रधान शिक्षण-पद्धति के आधार पर बौद्ध वैचारिक परम्परा, विश्लेषणात्मक चिन्तन तथा दार्शनिक विमर्श की परिपाटी का अध्ययन कराना। 4. मूल पालि पाठ के अध्ययन एवं व्याख्या के माध्यम से विद्यार्थियों में भाषिक दक्षता, दार्शनिक विवेचन क्षमता तथा बौद्ध सिद्धान्तों के समकालीन सन्दर्भों में अनुप्रयोग की योग्यता विकसित करना। **अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) :** 1. विद्यार्थी *मिलिन्दपञ्ह* की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, ग्रन्थ-परम्परा, संरचना तथा राजा मिलिन्द और आचार्य नागसेन के व्यक्तित्व एवं योगदान की व्याख्या कर सकेंगे।			

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			2. विद्यार्थी *रथोपमा, अनत्तवाद, पटिसन्धि, नाम-रूप, वेदना, सञ्ञा, चेतना, विञ्ञाण* तथा अन्य प्रमुख दार्शनिक अवधारणाओं का विश्लेषण एवं तुलनात्मक विवेचन कर सकेंगे। 3. विद्यार्थी *लक्खणपञ्ह* में प्रतिपादित शील, श्रद्धा, वीर्य, स्मृति, समाधि एवं प्रज्ञा जैसे बौद्ध सिद्धान्तों की व्याख्या कर उनके दार्शनिक एवं व्यावहारिक महत्त्व का मूल्यांकन कर सकेंगे। 4. विद्यार्थी *मिलिन्दपञ्ह* में प्रयुक्त प्रश्नोत्तर शैली, तर्क-पद्धति, उपमाओं तथा विश्लेषणात्मक प्रस्तुतीकरण का समालोचनात्मक अध्ययन कर बौद्ध बौद्धिक परम्परा की विशेषताओं को समझ सकेंगे।			
			आधारगन्थो- 1. **मिलिन्दपञ्हपालि**, सम्पादको- स्वामी द्वारिकादासशास्त्री, बौद्धभारती, वाराणसी, 2006 2. **धम्मपदपालि एवं मिलिन्दपञ्हो** (पठमदुतिया परिच्छेदा), पालि-अध्ययन-केन्द्रम्, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, लखनऊ-परिसरः, 2020			
			गन्थकथावत्थु पठमो परिच्छेदो - पुब्बयोगो 1. नागसेनस्स मिलिन्दस्स च पुब्बजातिकथा 2. पूरणेन कस्सपेन रञ्ञो मिलिन्दस्स समागमो 3. मक्खलिगोसालेन मिलिन्दस्स समागमो 4. आयस्मता अस्सगुत्तेन भिक्खुसङ्घो सन्निपातितो (आयस्मतो अस्सगुत्तस्स पुच्छा)	1	1	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभागः
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			5. सो अस्सगुत्तो महासेनं देवपुत्तं याचेसि 6. आयस्मतो रोहणस्स दण्डकम्मं 7. महासेनस्स मनुस्सलोके पातुभावो 8. नागसेनस्स दारकस्स सज्झायकालो (दहरकालो) 9. आयस्मता रोहणेन नागसेनस्स समागमो नागसेनस्स पब्बज्जा			
			1. आयस्मतो नागसेनस्स दण्डकम्मं 2. आयस्मतो नागसेनस्स धम्मदेसना 3. आयस्मतो नागसेनस्स पाटलिपुत्तगमनं 4. सेट्ठिस्स अभिधम्मदेसनं 5. नागसेनस्स अरहन्तभावो 6. नागसेनस्स सन्तिके दूतपेसनं 7. आयुपालेन सद्धिं मिलिन्दस्स समागमो 8. नागसेनस्स सागलनगरे आगमनं नागसेनेन मिलिन्दस्स पठमसमागमो	1	2	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshatra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			दुतियो परिच्छेदो – लक्खणपञ्हो (1) महावग्गो 1. रथूपमाय अनत्तवाददीपनं (रथूपमाय पुग्गलवीमंसनं) 2. वस्सगणनपञ्हो 3. पण्डितवादो च राजवादो च (वीमंसनपञ्हो) 4. अनन्तकायस्स उपासकत्तं (अनन्तकायपञ्हो) 5. किमत्था पब्बज्जा? 6. को न पटिसन्दहति? (पटिसन्धिपञ्हो) 7. किं लक्खणो मनसिकारो किं लक्खणा पञ्ञा? 8. कतमे धम्मा कुसला? (सीललक्खणपञ्हो) (क) किं लक्खणं सीलं? (ख) किं लक्खणा सद्धा? (सम्पसादनलक्खणसद्धापञ्हो) (ग) किं लक्खणं विरियं? (विरियलक्खणपञ्हो) (घ) किं लक्खणा सति? (सतिलक्खणपञ्हो) (ङ) किं लक्खणो समाधि? (समाधिलक्खणपञ्हो) (च) किं लक्खणा पञ्ञा? (पञ्ञालक्खणपञ्हो) (छ) नाना धम्मा एकत्थनिप्फादका (नानाधम्मानं एककिच्चनिप्फादनपञ्हो)	1	3	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshatra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			(2) अद्धानवग्गो 9. न च सो, न च अञ्ञो (धम्मसन्ततिपञ्हो) 10. जातिक्खयञाणं (पटिसन्दहनपञ्हो) 11. ञाणं च पञ्ञा च 12. कायिका चेतसिका च वेदना (पटिसन्दहनपुग्गलपञ्हो) 13. वेदनायो 14. को पटिसन्दहति? (नामरूपएकत्तनानत्तपञ्हो) 15. ननु नागसेनो परिसन्दहिस्सति (थेरपटिसन्दहनापटिसन्दहनपञ्हो) 16. कतमं नामं रूपं च? (नामरूपपटिसन्दहनपञ्हो) तयो अद्धा (अद्धानपञ्हो)			
			(3) विचारवग्गो 1. अविज्जामूलका (अद्धानमूलपञ्हो) 2. पुरिमा कोटि न पञ्ञायति (पुरिमकोटिपञ्हो) 3. कतमा पुरिमा कोटि? (पुरिमकोटिपञ्ञायनपञ्हो) 4. सङ्खारानं उप्पादो निरोधो च (सङ्खारजायमानपञ्हो) 5. भवन्ता येव सङ्खारा जायन्ति	1	4	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

Head of the Department
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
Central Sanskrit University
Lucknow Campus

			6. न हेत्थ वेदगू उपलब्भति (वेदगूपञ्हो) 7. पठमं चक्खुविञ्ञाणं, पच्छा मनोविञ्ञाणं (चक्खुविञ्ञाणादिपञ्हो) 8. फस्सपमुखा धम्मा (फस्सलक्खणपञ्हो) (क) किं लक्खणो फस्सो (ख) किं लक्खणा वेदना (ग) किं लक्खणा सञ्ञा (घ) किं लक्खणा चेतना (ङ) किं लक्खणं विञ्ञाणं (च) किं लक्खणो वितक्को (छ) किं लक्खणो विचारो (4) निब्बानवग्गो 1. चेतसिका धम्मा एकभावगता (फस्सादिविनिब्भुजनपञ्हो) 2. नागसेनपञ्हो				

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

कक्खा	सत्तद्धं	पत्तसङ्केतो	पाठचरियाविवरणं	क्रेडिट	यूनिट	होरा
एम.ए. पठमवस्सं	पठमसत्तं	DSCC-19	**पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) :** 1. विद्यार्थियों को अभिधम्मपिटक तथा *अभिधम्मत्थसङ्गह* के स्वरूप, उद्देश्य, विषयवस्तु एवं पालि बौद्ध साहित्य में उसके दार्शनिक महत्त्व से परिचित कराना। 2. *चित्तसङ्गहविभाग* के अध्ययन के माध्यम से परमत्थधम्मों, विभिन्न चित्त-श्रेणियों तथा उनके वर्गीकरण की सैद्धान्तिक एवं विश्लेषणात्मक समझ विकसित करना। 3. कामावचर, रूपावचर, अरूपावचर तथा लोकुत्तर चित्तों के स्वरूप, भेद एवं उनके बौद्ध मनोविज्ञान एवं दर्शन में स्थान का सम्यक् अध्ययन कराना। 4. मूल पालि पाठ के अध्ययन एवं व्याख्या के माध्यम से विद्यार्थियों में अभिधम्मीय पारिभाषिक शब्दावली, दार्शनिक विश्लेषण तथा बौद्ध मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के व्यावहारिक अनुप्रयोग की क्षमता विकसित करना।			
			अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : 1. विद्यार्थी अभिधम्मपिटक एवं *अभिधम्मत्थसङ्गह* की संरचना, विषयवस्तु तथा बौद्ध दार्शनिक परम्परा में उनके महत्त्व की व्याख्या कर सकेंगे।			

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			2. विद्यार्थी चतुर्विध परमत्थधम्मों तथा *चित्तसङ्गहविभाग* में वर्णित कामावचर, रूपावचर, अरूपावचर एवं लोकुत्तर चित्तों के वर्गीकरण एवं स्वरूप का विश्लेषण कर सकेंगे। 3. विद्यार्थी अकुशल, अहेतुक, सोभन, कुसल, विपाक एवं क्रिया चित्तों के पारस्परिक सम्बन्धों तथा उनकी विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन एवं मूल्यांकन कर सकेंगे। 4. विद्यार्थी अभिधम्मीय चित्त-वर्गीकरण के आधार पर बौद्ध मनोविज्ञान की मूल अवधारणाओं की व्याख्या करते हुए उनके दार्शनिक एवं व्यवहारिक महत्त्व को स्पष्ट कर सकेंगे।			
			आधारगन्थो- **अभिधम्मत्थसङ्गहो (पठमो भागो)**, सम्पादको- प्रो. रामशंकरत्रिपाठी, सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय, वाराणसी, 1991			
			भूमिका- अभिधम्मपिटकस्स परिचयो अभिधम्मत्थसंगह-गन्थस्स परिचयो अभिधम्मत्थसंगहस्स विसयवत्थु चित्तसङ्गहविभागस्स सारो गन्थस्स मङ्गलगाथा	1	1	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshatra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			चतुधा परमत्था धम्मा			
			चतुपञ्ञास कामावचरचित्तानि- द्वादस अकुसलचित्तानि अट्ठारस अहेतुकचित्तानि चतुवीसति कामावचरसोभन-चित्तानि कामावचरचित्त-सम्बद्धगाथा	1	2	16-20
			पञ्चदस रूपावचरचित्तानि- पञ्च रूपावचरकुसलचित्तानि पञ्च रूपावचरविपाकचित्तानि पञ्च रूपावचरक्रियाचित्तानि रूपावचरचित्त-सम्बद्धगाथा	1	3	16-20
			द्वादस अरूपावचरचित्तानि - चत्तारि अरूपावचरकुसलचित्तानि चत्तारि अरूपावचरविपाकचित्तानि चत्तारि अरूपावचरक्रियाचित्तानि अरूपावचरक्रियाचित्त-सम्बद्धगाथा	1	4	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshatra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			अट्ठ लोकुत्तरचित्तानि- चत्तारि लोकुत्तरकुसलचित्तानि चत्तारि लोकुत्तरविपाकचित्तानि लोकुत्तरचित्त-सम्बद्धगाथा			

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

कक्खा	सत्तद्धं	पत्तसङ्केतो	पाठचरियाविवरणं	क्रेडिट	यूनिट	होरा
एम.ए. पठमवस्सं	पठमसत्तद्धं	ECA-1	**पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) :** पालि तिपिटक एवं अनुपिटक साहित्य के इतिहास का मुख्य उद्देश्य छात्रों को पालि साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, विकास, वर्गीकरण और महत्वपूर्ण ग्रंथों से परिचित कराना है। विशेष रूप से- 1. तिपिटक (विनय पिटक, सुत्त पिटक एवं अभिधम्मपिटक) और अनुपिटक साहित्य की संरचना और महत्व को समझाना। 2. प्रारंभिक पालि साहित्य के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सन्दर्भ को समझना। 3. बौद्ध संगीतियों और तिपिटक के संरक्षण की प्रक्रिया का अध्ययन करना।			
			अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : पाठ्यक्रम के समापन पर छात्र निम्नलिखित योग्यताएँ प्राप्त करेंगे: 1. विद्यार्थी विनय पिटक, सुत्त पिटक व अभिधम्मपिटक और अनुपिटक ग्रंथों की संरचना और उनकी विषयवस्तु को समझ सकेंगे।			

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभागः
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			2. छः धम्म संगीतियों और तिपिटक के संरक्षण की प्रक्रिया और कालक्रम को समझ सकेंगे। 3. पालि साहित्य के प्रारंभिक विकास और इसके सांस्कृतिक प्रभाव को समझ सकेंगे। 4. पूर्व-बुद्धघोष युग के अनुपिटक ग्रंथों (नेत्तिपकरण, पेटकोपदेस, मिलिन्दपञ्हो आदि) का काल-विभाग और महत्व का मूल्यांकन कर सकेंगे।			
			पालि वाङ्मय का इतिहास (तिपिटक एवं अनुपिटक साहित्य) आधारगन्थो- 1. **पालि साहित्य का इतिहास** - भिक्षु धर्मरक्षित, ज्ञानमण्डल प्रा. लि., वाराणसी, 1971 2. **पालि साहित्य का इतिहास** - महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, सम्यक् प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020 3. **पालि साहित्य का इतिहास** - भरतसिंह उपाध्याय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 2000			
			पालि तिपिटक का परिचय - तिपिटक की संरचना :- विनय पिटक, सुत्त पिटक और अभिधम्म पिटक। - तिपिटक का रचनाकाल और संकलन। - छः बौद्ध संगीतियों की बुद्धवाणी के संरक्षण में भूमिका। - तिपिटक का बौद्ध धर्म में महत्व।	1	1	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshatra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			विनय पिटक - विनय पिटक का परिचय एवं उसके ग्रन्थ। - विनय पिटक के वस्तु विधान का संक्षिप्त परिचय :- सुत्त-विभंग, खन्धक, परिवार। - भिक्खु और भिक्खुनी नियम। - विनय पिटक का नैतिक और सामाजिक महत्व।	1	2	16-20
			सुत्त पिटक और अनुपिटक साहित्य - सुत्त पिटक का परिचय एवं निकाय :- दीघ निकाय, मज्झिम निकाय, संयुत्त निकाय, अंगुत्तर निकाय, खुद्दक निकाय। - अनुपिटक साहित्य का परिचय एवं ग्रन्थ :- पेटकोपदेस, मिलिन्दपञ्हो, नेत्तिप्पकरण। - सुत्त पिटक की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व। - अनुपिटक का महत्व।	1	3	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshatra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			अभिधम्म पिटक - अभिधम्म शब्द परिचय, उद्भव एवं बुद्धवचनत्व। - अभिधम्म पिटक का परिचय एवं उसके ग्रन्थ। - अभिधम्म पिटक के ग्रन्थों का परिचय - धम्मसंगणि, विभंग, धातुकथा, पुग्गलपञ्ञत्ति, कथावत्थु, यमक, पट्ठान। - अभिधम्म पिटक का वर्तमानकालिक महत्त्व।	1	4	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

कक्खा	सत्तड्ढं	पत्तसङ्केतो	पाठचरियाविवरणं	क्रेडिट	यूनिट	होरा
एम.ए. पठमवस्सं	दुतियसत्तड्ढं	DSCC-20	**पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) :** 1. विद्यार्थियों को अट्ठकथा-परम्परा, विशेषतः आचार्य बुद्धघोषकृत *निदानकथा* के स्वरूप, ऐतिहासिक विकास तथा पालि साहित्य में उसके स्थान से परिचित कराना। 2. सुगत-परम्परा, जातक-साहित्य, बोधिसत्त्व की अवधारणा तथा बुद्धत्व की प्राप्ति से सम्बन्धित प्रमुख सिद्धान्तों एवं अवधारणाओं का सम्यक् अध्ययन कराना। 3. *दूरेनिदान*, *अविदूरेनिदान* एवं *सन्तिकेनिदान* के माध्यम से बुद्धचरित, दशपारमिताओं तथा पूर्वबुद्धों की परम्परा का दार्शनिक एवं साहित्यिक विश्लेषण करने की क्षमता विकसित करना। 4. मूल पालि पाठ के अध्ययन, भाषिक-व्याख्या तथा बौद्ध नैतिक मूल्यों एवं पारमिताओं की समकालीन प्रासंगिकता को समझने का कौशल विकसित करना।			
			अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : 1. विद्यार्थी अट्ठकथा-परम्परा, जातकट्ठकथा तथा आचार्य बुद्धघोष के साहित्यिक योगदान की व्याख्या एवं मूल्यांकन कर सकेंगे।			

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभागाध्यक्ष
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			2. विद्यार्थी *निदानकथा* के तीनों विभागों—*दूरेनिदान, अविदूरेनिदान* एवं *सन्तिकेनिदान*—की विषयवस्तु, संरचना एवं ऐतिहासिक महत्त्व को समझ और विश्लेषित कर सकेंगे। 3. विद्यार्थी बोधिसत्त्व, पच्चेकबुद्ध, सम्मासम्बुद्ध, सोतापन्न, सकदागामी, अनागामी तथा अरहन्त आदि प्रमुख बौद्ध अवधारणाओं का तुलनात्मक विवेचन कर सकेंगे। 4. विद्यार्थी दान, शील, नेक्कम्म, प्रज्ञा, वीर्य, क्षान्ति, सत्य, अधिष्ठान, मैत्री एवं उपेक्षा पारमिताओं के स्वरूप तथा बुद्धत्व-प्राप्ति में उनके योगदान का विश्लेषण एवं मूल्यांकन कर सकेंगे। 5. विद्यार्थी *निदानकथा* के चयनित मूल पालि पाठ का अध्ययन कर उसकी भाषिक विशेषताओं, भावार्थ तथा निहित बौद्ध सिद्धान्तों की व्याख्या एवं समकालीन सन्दर्भों में अनुप्रयोग कर सकेंगे।			
			आधारगन्थो- अट्ठकथाचरियबुद्धघोसविरचिता **निदानकथा**, अनुवादको- डॉ. महेश तिवारी, चौखम्बा संस्कृत सीरिज ऑफिस वाराणसी, 1970			
			- सुगतपरम्परायं कथासाहिच्चं तस्स लक्खणानि च - जातकस्स परिचयो, - अट्ठकथापरम्परा जातकट्ठकथापरिचयो च, - जातकट्ठकथाकारस्स भदन्ताचरिय-बुद्धघोसस्स परिचयो,	1	1	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

Head of the Department
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
Central Sanskrit University
Lucknow Campus

			- अट्ठकथापरम्परायं अञ्ञेसं अट्ठकथाकारानं परिचयो योगदानं च - निदानकथापरिचयो – 1. दूरे-निदानं, 2. अविदूरे-निदानं, 3 सन्तिके-निदानं			
			पमुखा अवधारणायो – सोतापन्नो, सकदागामी, अनागामी, अरहं च - परिचयो - बोधिसत्तो, पच्चेकबुद्धो, बुद्धो, सम्मा सम्बुद्धो, सम्बोधि च - पणामगाथा - निदानकथा - दूरेनिदानं - सुमेधकथा (तत्रिदं दूरेनिदानं नाम ………… तथेव बुद्धसेट्ठानं वचनं धुवसस्सतं।।) (पृ.सं.- 4-48)	1	2	16-20
			बुद्धकारकधम्मचिन्तनं दानपारमी, सीलपारमी, नेक्खम्मपारमी, पञ्ञापारमी,	1	3	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभागाध्यक्ष
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			विरियपारमी, खन्तिपारमी, सच्चपारमी, अधिट्ठानपारमी, मेत्तापारमी, उपेक्खापारमी (सुमेधकथा निट्ठिता याव) (पृ.सं.- 48-68)			
			- पुब्बबुद्धानं अवधारणा तंसम्बद्ध साहिच्चं च -भगवा दीपङ्करो, -भगवा कोण्डञ्ञो, -भगवा रेवतो, -भगवा अनोमदस्सी, -भगवा विपस्सी, -भगवा सिखी, -भगवा वेस्सभू, -भगवा ककुसन्धो,	1	4	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			-भगवा कोणागमणो, -सब्बे बुद्धा, -धम्माचरणानिसंसा, (पृ.सं.- 68-78)			

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

कक्खा	सत्तद्धं	पत्तसङ्केतो	पाठचरियाविवरणं	क्रेडिट	यूनिट	होरा
एम.ए. पठमवस्सं	दुतियसत्तं	DSCC-21	**पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) :** 1. विद्यार्थियों को विनयपिटक के *महावग्ग*, विशेषतः *महाखन्धक* के स्वरूप, विषयवस्तु तथा बौद्ध संघ के प्रारम्भिक इतिहास में उसके महत्त्व से परिचित कराना। 2. बुद्धत्व-प्राप्ति के उपरान्त की प्रमुख घटनाओं, प्रारम्भिक धर्मप्रवर्तन तथा बौद्ध संघ की स्थापना से सम्बन्धित ऐतिहासिक एवं साहित्यिक प्रसंगों का सम्यक् अध्ययन कराना। 3. *धम्मचक्कप्पवत्तन*, *तिलक्खण* (अनिच्च, दुक्ख, अनत्ता) तथा प्रव्रज्या-सम्बन्धी शिक्षाओं के माध्यम से बौद्ध दर्शन एवं नैतिक सिद्धान्तों की गहन समझ विकसित करना। 4. मूल पालि पाठ के अध्ययन एवं व्याख्या के माध्यम से विद्यार्थियों में भाषिक दक्षता, ऐतिहासिक विश्लेषण तथा बौद्ध सिद्धान्तों की समकालीन प्रासंगिकता का विवेचन करने की क्षमता विकसित करना।			
			अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : 1. विद्यार्थी *महावग्ग* एवं *महाखन्धक* की संरचना, विषयवस्तु तथा विनय साहित्य में उनके स्थान एवं महत्त्व की व्याख्या कर सकेंगे।			

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshatra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			2. विद्यार्थी *बोधिकथा, अजपालकथा, मुचलिन्दकथा, राजायतनकथा, ब्रह्मयाचनकथा* तथा *पञ्चवग्गियकथा* आदि प्रसंगों का ऐतिहासिक एवं साहित्यिक विश्लेषण कर सकेंगे। 3. विद्यार्थी *धम्मचक्कप्पवत्तन* तथा *तिलक्खण*—**सब्बे सङ्खारा अनिच्चा, सब्बे सङ्खारा दुक्खा** और **सब्बे धम्मा अनत्ता**—के दार्शनिक आधार एवं व्यावहारिक महत्त्व की व्याख्या एवं मूल्यांकन कर सकेंगे। 4. विद्यार्थी *पब्बज्जा, उपसम्पदा, मारकथा, भद्दवग्गियवत्थु, उरुवेलपटिहारियकथा, बिम्बिसारसमागम* तथा *सारिपुत्त-मोग्गल्लान* की प्रव्रज्या से सम्बन्धित घटनाओं का समालोचनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।			
			आधारगन्थो- 1. **विनयपिटके महावग्गो**, सम्पादको- भिक्खु जगदीशकश्यप, नवनालन्दा महाविहार, नालन्दा, 2017 2. **विनयपिटक**, अनुवादको- महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008			
			महावग्गस्स परिचयो - महाखन्धकस्स परिचयो विसयवत्थु च महाखन्धकं 1. बोधिकथा 2. अजपालकथा	1	1	16-20

			3. मुचलिन्दकथा 4. राजायतनकथा 5. ब्रह्मयाचनकथा			
			6. पञ्चवग्गियकथा 7. धम्मचक्कप्पवत्तनं 8. तिलक्खण का परिचय - सब्बे सङ्खारा अनिच्चा - सब्बे सङ्खारा दुक्खा - सब्बे धम्मा अनत्ता 9. पब्बज्जाकथा	1	2	16-20
			10. मारकथा 11. पब्बज्जूपसम्पदाकथा 12. भद्दवग्गियवत्थु 13. उरुवेलपटिहारियकथा	1	3	16-20
			14. बिम्बिसारसमागमकथा 15. सारिपुत्तमोग्गल्लानपब्बज्जाकथा	1	4	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

कक्खा	सत्तङ्कं	पत्तसङ्केतो	पाठचरियाविवरणं	क्रेडिट	यूनिट	होरा
एम.ए. पठमवस्सं	दुतियसत्तङ्कं	DSCC-22	**पाठ्यक्रम उद्देश्य** (Course Objectives) : 1. विद्यार्थियों को पालि-व्याकरण की परम्परा, उसकी विशिष्टताओं तथा *कच्चायनव्याकरण* में प्रतिपादित प्रमुख व्याकरणिक सिद्धान्तों से परिचित कराना। 2. नामकप्प के कारककप्प, समास एवं तद्धित-प्रत्ययों के अध्ययन के माध्यम से पालि शब्दरचना एवं रूपनिर्माण की सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक समझ विकसित करना। 3. विभिन्न प्रकार के समासों, तद्धित-प्रत्ययों तथा उनके अर्थभेदों का विश्लेषण कर विद्यार्थियों में व्याकरणाधारित भाषा-बोध, पाठानुवाद एवं वाक्य-विश्लेषण की क्षमता का विकास करना। 4. *पालिवाक्यावली* के चयनित पाठों के अध्ययन के माध्यम से शुद्ध पालि वाक्य-निर्माण, भाषिक अभिव्यक्ति तथा संप्रेषण-कौशल को सुदृढ़ बनाना।			
			अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : 1. विद्यार्थी पालि-व्याकरण की परम्परा एवं उसकी प्रमुख विशेषताओं की व्याख्या करते हुए *कच्चायनव्याकरण* के आधारभूत सिद्धान्तों को समझ सकेंगे। 2. विद्यार्थी कम्मधारय, तप्पुरिस, बहुब्बीहि, द्वन्द्व तथा अव्ययीभाव समासों की संरचना, प्रयोग एवं अर्थभेदों का विश्लेषण तथा उचित अनुप्रयोग कर सकेंगे।			

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			3. विद्यार्थी अपत्यार्थक, संसृष्टाद्यर्थक, उत्पन्नार्थक, समूहार्थक, निश्रितार्थक, विशेषार्थक, स्वामित्वार्थक, संख्यार्थक तथा विभागार्थक तद्धित-प्रत्ययों की पहचान, रूपनिर्माण एवं प्रयोग कर सकेंगे। 4. विद्यार्थी व्याकरणिक नियमों एवं प्रत्यय-प्रक्रियाओं के आधार पर पालि शब्दों एवं वाक्यों का विश्लेषण, अनुवाद तथा भाषिक व्याख्या करने में सक्षम होंगे। 5. विद्यार्थी *पालिवाक्यावली* के चयनित पाठों का अध्ययन कर शुद्ध पालि वाक्य-रचना, लेखन, अनुवाद एवं प्रभावी भाषिक संप्रेषण का व्यावहारिक प्रदर्शन कर सकेंगे।			
			आधारगन्थो- 1. **कच्चायनव्याकरणं**, सम्पादका - लक्ष्मीनारायण तिवारी बीरबलशर्मा च, तारा बुक एजेन्सी, वारणसी, 1989 2. **पालिवाक्यावली**, लेखक - डॉ. प्रफुल्ल गड़पाल, मान्यता प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015			
			(i) पालि-व्याकरणं - पालि-व्याकरण-परम्परा - पालिव्याकरणस्स विसेतायो (ii) नामकप्पे कारककप्पो (छट्ठो कण्डो)	1	1	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshatra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			- समासो (i) कम्मधारयो, (ii) तप्पुरिसो, (iii) बहुब्बीहि, (iv) द्वन्दो, (v) अब्ययीभावो	1	2	16-20
			पच्चया – - तद्धितप्पकरणस्स परिचयो -अपच्चत्थकप्पच्चया (अपत्यार्थक-प्रत्यय) - ण, णायन, णान, णेय्य, णि, ण्य -संसट्ठज्जत्थकप्पच्चया (संसृष्टाद्यर्थक-प्रत्यय) - णेर, णिको, - उप्पन्नत्थक (उत्पन्नार्थक) पच्चया - इम, इय, - समूहत्थक (समूहार्थक) - कण, ण - निस्सित (निश्रित)-अत्थकप्पच्चया - ल - विसेसत्थक (विशेषार्थक)-प्पच्चया - तर, तम, - स्वामित्वत्थक (स्वामित्वार्थक) पच्चया - सी, इक, ई, रो, वन्तु, मन्तु, ण - संख्या - म, छ, ई, थ, ठ, तिय, - विभागत्थक (विभागार्थक) पच्चया - धा, था, थं	1	3	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			- पालिवाक्यावली (i) पठमो परिच्छेदो (ii) दुतियो परिच्छेदो	1	4	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

कक्खा	सत्तद्धं	पत्तसङ्केतो	पाठचरियाविवरणं	क्रेडिट	यूनिट	होरा
एम.ए. पठमवस्सं	दुतियसत्तं	DSCC-23	**पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) :** 1. विद्यार्थियों को *अभिधम्मत्थसङ्गह* के *चेतसिकसङ्गहविभाग* के स्वरूप, उद्देश्य एवं अभिधम्मीय मनोविज्ञान में उसके महत्त्व से परिचित कराना। 2. चित्त एवं चेतसिकों के पारस्परिक सम्बन्ध, उनके सम्पयोग, वर्गीकरण तथा कार्य-प्रणाली का व्यवस्थित अध्ययन कराकर बौद्ध मनोवैज्ञानिक एवं दार्शनिक अवधारणाओं की गहन समझ विकसित करना। 3. सोभन, अकुशल, अञ्ञसमान, पकिण्णक, विरति तथा अप्पमञ्ञा आदि चेतसिकों के स्वरूप एवं उनके चित्तों के साथ सम्बन्ध का विश्लेषणात्मक अध्ययन कराना। 4. मूल पालि पाठ के अध्ययन एवं व्याख्या के माध्यम से विद्यार्थियों में अभिधम्मीय पारिभाषिक शब्दावली, दार्शनिक विवेचन तथा बौद्ध मनोविज्ञान के सिद्धान्तों के समकालीन अनुप्रयोग की क्षमता विकसित करना।			
			अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : 1. विद्यार्थी *चेतसिकसङ्गहविभाग* की संरचना, विषयवस्तु तथा अभिधम्म दर्शन में उसके स्थान एवं महत्त्व की व्याख्या कर सकेंगे।			

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshatra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			2. विद्यार्थी चित्त एवं चेतसिकों के चतुविध सम्पयोग, अञ्ञसमान, पकिण्णक, अकुशल तथा सोभन चेतसिकों के वर्गीकरण एवं विशेषताओं का विश्लेषण कर सकेंगे। 3. विद्यार्थी विरति, अप्पमञ्ञा तथा अन्य प्रमुख चेतसिकों के स्वरूप, कार्य एवं बौद्ध साधना में उनकी भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन एवं मूल्यांकन कर सकेंगे। 4. विद्यार्थी विभिन्न चित्त-समूहों—लोकुत्तरचित्त, महग्गतचित्त, कामावचरसोभनचित्त एवं अकुसलचित्त—के साथ चेतसिकों के सम्बन्ध, नियत-अनियत भेद तथा सङ्गहनयों का समालोचनात्मक विश्लेषण कर सकेंगे।			
			आधारगन्थो- अनुरुद्धाचरियप्पणीतो **अभिधम्मत्थसङ्गहो** (चेतसिकसङ्गहविभागो नाम दुतियो परिच्छेदो), सम्पादको- प्रो. रामशङ्कर त्रिपाठी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, 2016			
			चित्त-चेतसिकानं चतुब्बिधसम्पयोगलक्खणानि, अञ्ञसमानचेतसिका, पकिण्णकचेतसिका, अकुशलचेतसिका	1	1	16-20
			सोभनचेतसिका, सोभनसाधारणा,	1	2	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			विरतियो चेतसिका, अप्पमञ्ञादयो, द्विपञ्ञास-चेतसिकसम्बन्धिता सङ्गहगाथा			
			अञ्ञसमानचेतसिक-सम्पयोगनयो, सब्बचित्तसाधारण-सम्पयोगनयो, पकिण्णक-सम्पयोगनयो, अकुसलचेतसिक-सम्पयोगनयो, सोभनचेतसिक-सम्पयोगनयो,	1	3	16-20
			नियतानियतभेदो, सङ्गहनयो, सङ्गहचित्तसङ्गहनयो, लोकुत्तरचित्त-सङ्गहनयो, महग्गतचित्त-सङ्गहनयो, कामावचरसोभनचित्त-सङ्गहनयो, अकुसलचित्तसङ्गहनयो	1	4	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus